कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 10, (मार्च, 2024)
पृष्ठ संख्या 27–29

चुझे में वेंट पेस्टिंग क्या है?

डॉ. बलराम चौहान[1], डॉ. दर्शना भैसारे[2], डॉ. मुकुंद एम. कदम[3] एवं डॉ. परिमल परेश्वर[1]

स्नातकोत्तर विधार्थी[1], सहायक प्राध्यापक[2], सहयोगी प्राध्यापक[3],
कुक्कुट पालन शास्त्र विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय,
नागपूर, महाराष्ट्र, भारत।

Email Id: darshanabhaisare@gmail.com

मुर्गी पालन करते समय छोटे चूजो मे अलग अलग समस्या या रोग दिखने लगते है, उसी मे वेंट पेस्टिंग भी एक महत्वपूर्ण समस्या है। जब चूजा एक से दो सप्ताह का होता है, तब कभी कभी उसका मल पूरी तरह से निष्कासित नहीं हो पाता है ओर उसके गुदा से चिपक जाता है, और जैसे–जैसे चूजा अपने मल को अपने शरीर से बाहर निकालने की कोशिश करता है, इसका आकार ओर भी बड़ा और ठोस होता जाता है इस तरह, छोटे पिल्ले का गुदा अवरुद्ध हो जाता है और मल पास नहीं हो पाता है।

यह सबसे खतरनाक तब होता हे जब चूजे का गुदा पूरी तरह से अवरुद्ध हो जाता हे, इस परिस्थिति मे चूजा अपना मल त्याग नहीं कर पाता है। इस परिस्थिति को वेंट पेस्टिंग, पेस्टी वेंट या ''पेस्टिंग अप'' या ''पेस्टी बट'' के रूप में भी जाना जाता है। यह एक तनावपूर्ण स्थिति है, जिसमें चूजा अपना मल शरीर के बाहर नहीं निकाल पाता है। पिल्लों के गुदा के चारों ओर सूखा मल जमा हो जाता है। पिल्ले आमतौर पर गुदा बंद होने के 2 दिनों के अंदर मर जाते हैं, इसलिए इस समस्या को जल्दी से निवारण करना महत्वपूर्ण है। सामान्यतः यह समस्या कम उम्र के पक्षियों मे देखने को मिलती है।

पेस्टी वेंट के कारण क्या हैं?

१) हेचरी से फार्म तक आने के दौरान परिवहन तनाव।

२) खाद्य ओर स्वच्छ पानी का तनाव।

३) इनक्यूबेशन और ब्रूडिंग के दौरान उच्च तापमान के कारण, चूजों के सिकल मेटाबॉलिज्म मे बदलाव आनां।

४) ब्रूडिंग के दौरान जरूरत से ज्यादा तापमान चूजों मे तनाव की स्थिती पैदा करती है।

५) शरीर मे पानी की मात्रा का कम होना।

६) शुरुआती तीन दिनों मे पीने के पानी मे गुड की मात्रा ज्यादा होना।

७) खाद्य मे दानों का आकार जरूरत से ज्यादा बड़ा होना।

पेस्टी वेंट्स में सीकल चयापचय की क्या भूमिका है?

सीका का मुख्य कार्य आंत से पानी को अवशोषित करना है। ज्यादा तापमान की स्थिती मे पक्षी अपना तापमान संतुलित करने के लिए पेंटिंग क्रिया होती, पेंटिंग के दौरान पक्षी के शरीर से पानी वाष्प के रूप मे निकल जाता है, इस प्रक्रिया मे पानी के वाष्प होने से उनके शरीर को ठंडक मिलती है। लेकिन

इस वजह से शरीर के साथ साथ सिकम मे भी पानी की कमी हो जाती है। सिकम मे पानी के कम होने की वजह से सिकम के जीवाणुओ मे बदलाव होता हे जिससे पाचक पदार्थ पूरी तरह से पचता नहीं है और चिपचिपा रहता हेद्य जीवाणुओ के वातावरण मे हुए बदलाव की वजह से ये जीवाणु फाइबर या लॉन्ग फैटी एसिड को एसिटिक, प्रोपियोनिक और बायोटिक एसिड जैसे छोटे फैटी एसिड में परिवर्तित करते हैं। इस कारण पाचन तंत्र में कोई भी असंतुलन, पाचन और फाइबर के पाचन को प्रभावित करता है जो की वेन्ट पेस्टिन्ग का मुख्य कारण है। अगर संक्षेप में कहा जाए तो, पेस्टी वेंट्स तब होते हैं जब पाचन ऑफफैटी एसिड या फाइबर के साथ–साथ सिकम में पानी की मात्रा कम हो जाती है।

खराब पाचन

खराब पाचन का मुख्य कारण एसे खाद्य पदार्थों का सेवन है जो चूजों के लिए पचाने में मुश्किल होते हैं। इससे चूजों को अधिक गाड़ा और चिपचिपा मल निकालने का कारण बनता है जो अंततः उनके गुदा द्वार पर चिपक जाता है। इसका सामान्य कारण चूजों का कम विकसित पाचन तंत्र है। पाचक रस पूरी तरह से निकलते नहीं है। जिससे खाद्य पदार्थ पूरी तरह से पच नहीं पाते है। यह बताता है कि एक सप्ताह से अधिक उम्र के पक्षियो मे हमे वेन्ट पेस्टिन्ग आमतोर पर देखने को नहीं मिलता है क्योंकि वे पर्याप्त पाचन एंजाइम का उत्पादन करने में सक्षम हैं।

पिल्लों को इलेक्ट्रोलाइट्स देना ठीक है, लेकिन बहुत सारे इलेक्ट्रोलाइट्स पेस्टी बट्स का कारण बन सकते हैं। हमेशा पक्षियों को पीने के लिए साफ ओर स्वच्छ पानी देना चाहिए। यह भी पाया गया की खाद्य मे सोयाबीन की ज्यादा मात्रा होने से वेन्ट पेस्टिन्ग का खतरा बड़ जाता है।

कभी–कभी, चूजे वायरस और बैक्टीरिया से संक्रमित हो जाते हे जिससे कभी कभी दस्त जैसी परेशानी होती है। वो भी वेंट पेस्टिंग का एक मुख्य कारण है।

वेंट पेस्टिंग के लक्षण

१) भूख में कमी,

२) सामान्य कमजोरी

३) अच्छे से खाना और पानी न पीना

४) पक्षियों मे असमान विकास का होना

५) गुदा के आसपास मल का चिपकना

वेंट पेस्टिंग कैसे पक्षियों क विकास को प्रभावित करता है

वेंट पेस्टिंग होने की वजह से चूजे सही से खाद्य नहीं खाते हे ओर इसका सीधा प्रभाव उनके विकास पर देखने को मिलता है। इसकी वजह से बहुत ही काम एफ सी आर देखने को मिलता है इसका मतलब हे की पक्षी का सामान्यत जितना वजन होना चाहिये था उतना वजन होता नहीं है। सारे पक्षियों मे आसमान विकास तथा कुछ पक्षी छोटे ओर कमजोर होते है। सीधे–सीधे यह पूरे झुंड के सम्पूर्ण प्रदर्शन को प्रभावित करता है।

चूजों मे वेंट पेस्टिंग की रोकथाम कैसे करे

हमेशा इन बात का ध्यान रखेः

१) जैसे ही चूजे आते हे जल्दी ही उनको ब्रूडर के नीचे रखे।

२) पीने के लिए साफ दे तथा उसमे थोड़ा सा electrolyte ओर गुड़ मिलाए, पानी मे गुड केवल सुरुआत के तीन दिन ही दे।

३) ब्रूडर का तापमान पक्षी के अनुकूल रहे हमेशा इस बात का ध्यान रखे।

४) पानी मे probiotic मिला कर दे अगर खाद्य मे नहीं हो तो।

५) गादी (लिटर) को हमेशा सुखा और साफ रखे।

६) स्टार्टर खाद्य मे shell grit या bone meal ना मिलाए।

७) सुरुआत के कुछ दिन खाद्य मे उंप्रम हतपज मिलाए क्युकी पक्षी के मुह मे दात नहीं होते है तो उंप्रम हतपज पचाने मे मदद करती है।

वेंट पेस्टिंग होने पर गुदा को कैसे साफ करे

१) सबसे पहले साफ कपड़े को हल्के गरम पानी से भिगोए फिर हल्के हाथों से गुदा से चिपके मल को हटाए।

२) सूखे मल को खिचने की कोशिश न करें, क्योंकि यह पिल्ला की त्वचा को फाड़ सकता है और यहां तक कि वेंट को भी नुकसान पहुंचा सकता है।

३) वैकल्पिक रूप से, बहते गर्म पानी के नीचे पिल्ला के पीछे रखें। गर्म पानी कठोर मल को मुक्त करने और छेद को खोलने में मदद करेगा।

४) यदि मल बहुत ही ज्यादा सुखा हे तो फिर एक कॉटन ले ओर उसको हल्का गीला के चिपके हुए मल के उपर रख दे। जिससे की सुखा हुआ मल जल्दी ही त्वचा को छोड़ देगा ओर हम आसानी से निकाल पाएंगे।

५) गुदा को साफ करने के बाद उसके आसपास वेसलीन (veselin) लगा दे ताकि फिर से मल चिपके ना।

निष्कर्ष

सामान्यत सर्दियों और मानसून के समय हमे वेंट पेस्टिंग देखने को मिलती है सही ब्रूडिंग तापमान, साफ पीने का पानी और खाद्य मे मक्का ग्रिट आदि का ध्यान रख कर वेंट पेस्टिंग से बचा जा सकता है। इन सब बातों को नजरंदाज करने पर हमे वेंट पेस्टिंग के साथ साथ बहुत सारे चूजों की मौत भी हो सकती है इसलिये जल्दी से इसका उपचार करना चाहिए। अतः शुरुआत से ही हमे सारी बातों का ध्यान रखना चाहिए जिससे की वेंट पेस्टिंग के होने से चूजों को बचाया जा सके।